मानव मन्दिर

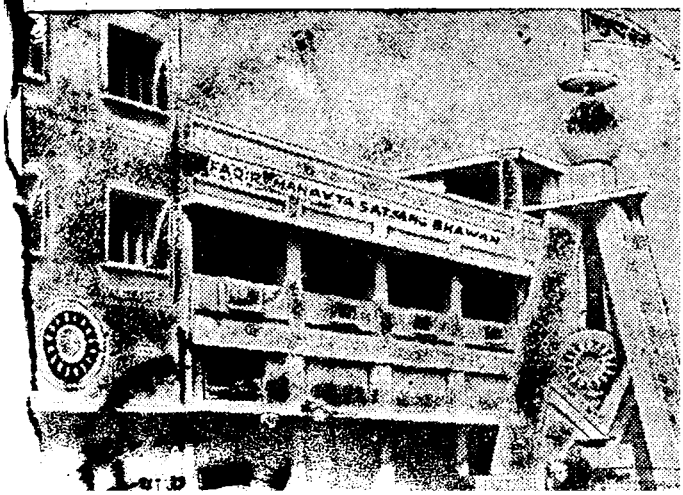

FORM I

(See Rule 8)

Place of Publication	Hoshiarpur
Date of Publication	10th of every month
Periodicity of Publication	Monthly
Printer's Name	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir. Hoshiarpur
Editor's Neme	Dr. Paras Ram Aggarwal
Nationality	Indian
Address	Manavta Mandir, Sutehri Road, Hoshiarpur.
Name and address of individuals, who own the Manav Mandir of partners of shareholders, holding more than one Percent of the total capital	- Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

I Dr. Paras Ram Aggarwal hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Dated : 11-3-85 Signature of Publisher

Printed and Published by: Dr. Paras Ram at Shiv Dev Rao Press. Manavta Mandir Hoshirapur. for the Faqir Library Charitable Trust, Hoshiarpur.

मानवता मन्दिर में अगला मासिक सत्संग 17-3-85 को होगा।

शुद्धिपत्र

पृ.	पं.	अशु.	शु.
3	13	भगवान्	बलवान्
3	15	बज	बल
14	22	भगवान्	भाग्यवान

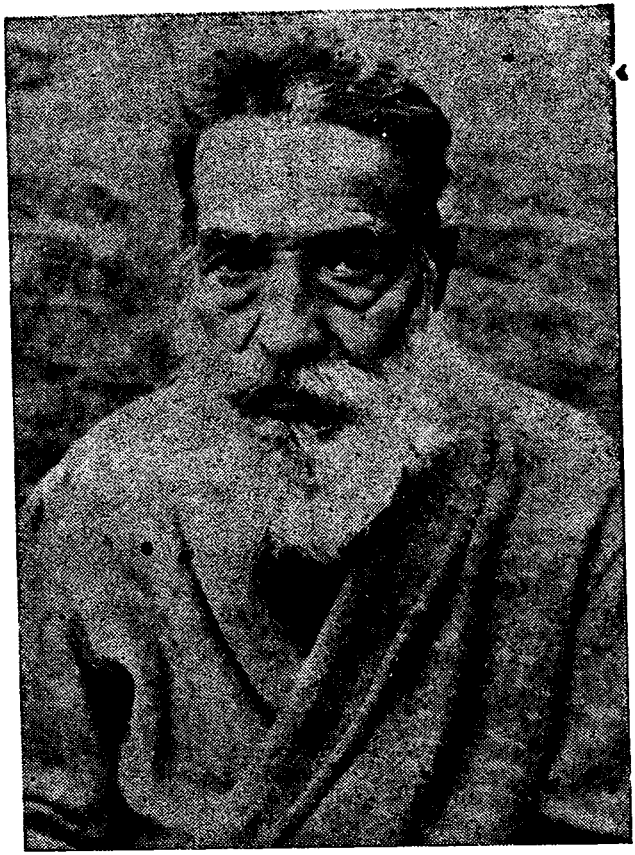

Param Sant Param Dayal Faqir Chand Ji Maharaj

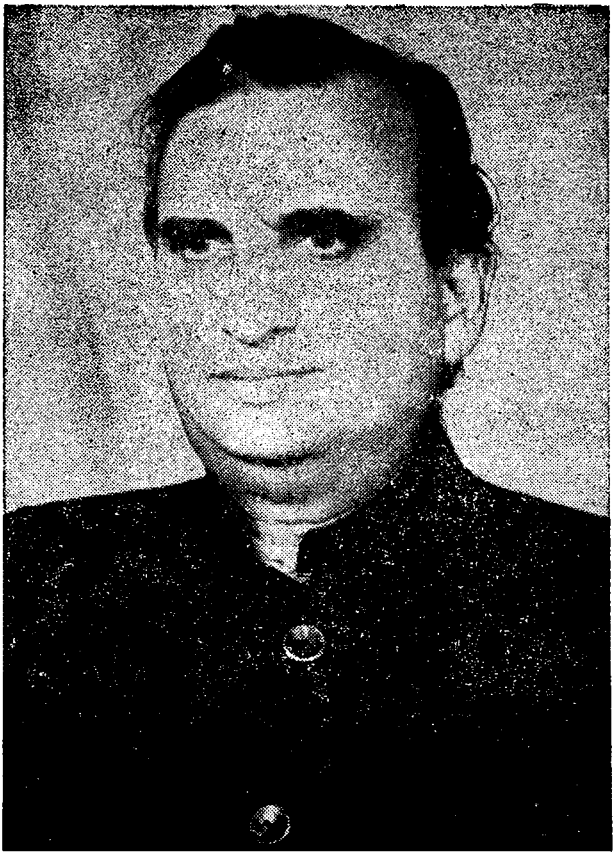

Param Sant Maaav Dayal Dr. I.C. Sharma Ji Maharaj

मासिक

मानव मन्दिर

विश्व में मानव मात्र के सामाजिक सांस्कृतिक
और आध्यात्मिक कल्याण और विकास की
सेवा में संलग्न मासिक पत्र

BE MAN
मनुष्य बनो

सम्पादक :
डा० परस राम अग्रवाल

वर्ष 11	सोमवार 11 मार्च 1985	संख्या 11

परमसन्त पूर्णधनी मालिके कुल हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी वर्मन, M.A.,LL.D. के अनमोल वचन

राधास्वामी धाम १९ जुलाई १९३०

मासिक पत्रिका 'सतसंगत'
जुलाई १९३१.

माया और ब्रह्म

ब्रह्म रहे माया के ओले, बिन माया ब्रह्म क्या बोले ॥

ब्रह्म ज़ात है और माया उसकी सिफ्त है। जहाँ ज़ात होगी वहाँ सिफ्त का होना भी लाज़मी है और जहाँ सिफ्त होगी वहाँ ज़ात का होना भी ज़रूरी है। ज़ात हस्ती है और सिफ्त ज़ात की सूरत का इज़हार है। ज़ात का इल्म बग़ैर सिफ़ात की मदद के नहीं होता और सिफ्त बग़ैर ज़ात के सहारे कोई काम नहीं कर सकती।

मालिक की ज़ात को किसी ने बग़ैर सिफ्त के नहीं देखा और यह मालिक की ज़ात ही है जिसने हमारे साथ

कहने-सुनने के ताल्लुकात को पैदा कर रखा है। जिसको ज़ात और सिफ़त के आपसी मेल की समझ नहीं आई उसको रूहानियत की असलियत की समझ मुश्किल से आयेगी। ज़ात हस्ती है और सिफ़त हस्ती के इज़हार का सामान है। तुम खुद ग़ौर करो कि अगर तुम इन दोनों की हैसियत को नहीं समझते हो तो तुम ब्रह्म की उपासना कैसे कर सकोगे। ब्रह्म में जो ब्रह्मपना है वही उसकी माया है। ब्रह्मपना ब्रह्म से जुदा नहीं है और न ब्रह्म अपने ब्रह्मपना से जुदा हो सकता है। जब रहेंगे दोनों एक साथ ही रहेंगे, इन दोनों को कोई जुदा नहीं कर सकता।

अगर यह बात भी तुम्हारी समझ में नहीं आती तो यूँ समझो :—

ज़ोरावर में ज़ोर है और भगवान् में बल है। ज़ोरावर ज़ोर से जुदा नहीं है और न ही बलवान् बल से जुदा है। जहाँ ज़ोरावर और बलवान् होगा वहाँ ही ज़ोर और बल भी होगा। ऐसे ही ब्रह्म और माया का ताल्लुक़ है। लोग असलियत की तरफ ध्यान नहीं देते और इधर-उधर बहके फिरते हैं। इसी बहकने का नाम अज्ञान और भ्रम है। कहने वाले ने असल में बहुत अच्छा कहा :—

ब्रह्म रहे माया के ओले, बिन माया ब्रह्म क्या बोले।

रूहानियत और जिस्मानियत में वोही फ़र्क है जो ब्रह्म और माया में है। ब्रह्म रूह है और ज़ात है, माया जिस्म है, माद्दा है और सिफ़त है।

अब तुम सवाल करोगे कि जब आप ब्रह्म और माया को एक ही समझते हैं तो फिर क्या आपका यह मतलब है कि हम माया से निकलने की कोशिश न करें और जिस्मानियत से छुटकारा पाने की इच्छा न करें? क्या हम

ब्रह्म की तरफ ख्याली क़दम न बढ़ायें ?

ये सब प्रश्न व्यर्थ हैं। हमने जब ब्रह्म और माया के दर्जे क़ायम कर दिये तो उसका यह मतलब है कि वो दो चीज़ें हो गईं। जब तक दुनिया में दो चीज़ें नहीं होतीं तब तक कोई आदमी उनमें फ़र्क नहीं दिखला सकता। इसीलिए हमने अपनी बात को दोपने के साथ शुरू किया ताकि समझने वालों को ग़लती में पड़ने का मौका न मिले। जब यह बात अच्छी तरह समझ में आ जाती है तो फिर ब्रह्म की तरफ क़दम बढ़ाने में और उसको समझने में ज़रा भी तकलीफ़ महसूस नहीं होती। हम इस मजमून को और साफ कर देते हैं। अगर कोई आदमी सिफ्त को अपना इष्ट बनाता है तो वह ग़लती पर है। इष्ट तो हमेशा ज़ात को ही बनाना चाहिए। जब एक बार आदमी ने ब्रह्म और ब्रह्मपने को, रूह या माद्दा को और हस्ती और हस्ती के ज़ाहिर करने के सामान को समझ लिया तो यह समझ उसके अज्ञान और भ्रम की जड़ को काट देती है और वह पूरी तरह से उस ज़ात में मिल जाता है और यही अन्तिम लक्ष्य है। तुम सोच-विचार करके ज़ात और सिफ्त, रूह और रूहानियत, हस्ती और हस्तीपना दोनों को एक कर दो। ये दोनों एक हो जायें और इनके दर्म्यान कोई फ़र्क न रहे यही मज़िले मक़सूद है। इसी को तौहीद कहते हैं और जिस वक्त आदमी की पहुँच उस स्थान तक हो जाती है तो उस वक्त तौहीद और वहदत का ख्याल भी गुम हो जाता है। वहाँ कहने-सुनने की ज़रूरत बाकी नहीं रहती। यह वो मुकाम है जहाँ दिल और ज़बान नहीं पहुँचते। जब बात समझ में आ गई तो सारे वहम जाते रहे और शान्ति प्राप्त हो गई।

अब सवाल यह है कि ख़्याली तौर पर चाहे कुछ भी

हो परन्तु अमली तौर पर हमारी ज़िन्दगी का सलूक कैसा हो और हम किस तरह से इस असूल को अपने अमल में लायें। इसका उत्तर यह है कि जिस तरह औरत मर्द को खती हुई अपने आप को खो देती है (यहाँ समझाने-बुझाने के वास्ते मैं ब्रह्म और माया को मर्द और औरत का नाम देता हूँ) औरत मर्द के घर आई अपने नाम और रूप दोनों को खो दिया। मां-बाप के घर वह इधर से उधर फुदकती हुई और अल्हड़पने की अठखेलियों का खेल खेलती हुई नज़र आ रही थी। पति के पहुँचते ही उसने अपने मुँह को छुपा लिया घूंघट की ओट का सहारा लिया, इस तरह उसका रूप गया और दूसरी तरह पर अपने नाम को खो दिया, हिन्दू ब्राह्मणों में कोई पुरुष औरत का नाम नहीं लेता। जिस तरह स्त्री ने अपने नाम और रूप को व्यावहारिक जगत् में आकर खो दिया इसी तरह जो आदमी मालिक को मिलने का इच्छुक है उसको भी अपने नाम और रूप को छोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। यह अमली (क्रियात्मक) मिसाल है। औरत मरी नहीं ज़िन्दा है, गुम नहीं हुई मौजूद है लेकिन सूरत बदली हुई है। वो नहीं चाहती कि कोई आदमी उसके कुंवारेपन का नाम लेकर उसे पुकारे बल्कि उसको इस बात का गौरव रहता है कि वह अपने पति के नाम से पुकारी जाये कि यह फलाँ आदमी की पत्नी है। इस तरह से पुकारा जाना और इस तरह से सलूक करना बहदत की अमली तालीम है जो हिन्दू घरानों में शुरू होती है। औरत अपने आपको छुपाती है और अपने पति को सामने लाती है। आप अबला बनती है और मर्द को बलवान् बनाती है। अपनी हस्ती को दबा लेती है और मर्द की हस्ती को उभार लेती है, अपने आपको पति के

अधीन रखकर हर समय उसकी सेवा का दम भरती है। यही काम मालिक के प्रेमी को भी करना चाहिए। औरत दरअसल वो औरत है जो अपनी लज्जा और पर्दे के ख़्याल को ताक़तवर बनाती हुई अपनी ज़िन्दगी के तमाम कारोबार को मर्द के साथ जोड़ देती है और उसे अपने पति पर इतना गर्व होता है कि वह सारी सृष्टि में उससे बढ़कर और किसी को नहीं समझती। एक दफ़ा मैंने एक स्त्री को देखा उसका पति कोढ़ी और अपंग (अपाहिज) था वह उस समय उसके साथ नहीं था। किसी ने उस औरत के साथ छेड़खानी की औरत नाराज़ हो गई और कहने लगी कि अगर मेरा पति यहाँ मौजूद होता तो इसी वक्त तेरा सिर गर्दन से उतार कर रख देता।

शिष्य को चाहिए कि अपने गुरु को प्रकट करे और अपने आप को छुपाये। सेवक को चाहिए कि अपनी सेवा की डींग न मारता हुआ अपने आपको तुच्छ और अपने स्वामी को सब कुछ समझे। बन्दे को चाहिए कि बन्दगी करता हुआ अपनी बन्दगी को कुछ कीमत न समझे और मालिक पर पूर्ण विश्वास करे। इसी तरह करने से ब्रह्म और माया, ज़ात और सिफ़ात की वास्तविक एकता हो जायेगी।

यह ख़्याल आज मेरे दिल में इसवास्ते पैदा हुआ कि एक लड़की की ससुराल से कई आदमी आये, वह उनको देखकर शर्म के मारे अन्दर भाग गई। मैंने सोचा कि भवितपक्ष में भी इसी प्रकार के सलूक की आवश्यकता होती है।

ज़ात ने क्या किया ? आप पर्दा में रहकर अपनी सिफ़्त को ज़ाहिर किया। जिस प्रकार पण्डित अपनी पण्डिताई को और वकील अपनी वकालत को प्रकट करता है उसी प्रकार

ब्रह्म भी अपने ब्रह्मपने या माया को प्रकट किया करता है। पण्डित की पण्डिताई और वकील की वकालत अन्त में अपने आपको पर्दे में रखकर या गुम होकर पण्डित और वकील की सिद्धि का कारण होती है। वकालत और पण्डिताई को तो कोई देखता तक नहीं, जब देखता है तो पण्डित और वकील को ही देखता है। इसी प्रकार भक्त की भक्ति भगवन्त के प्रकट करने का कारण बनती है। कुछ दिनों अमल करने पर खुद-ब-खुद मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य और परमपद की हालत नसीब हो जायेगी।

आज के उपदेश का विस्तार नीचे लिखे गये शब्द में अत्यन्त सुन्दरता के साथ बयान किया गया है, प्रेम से सुनो :—

— शब्द —

ब्रह्म में माया है, यह उससे अलग होती नहीं।
चाँद और सूरज से न्यारी, दोनों की जोती नहीं॥
जागता है ब्रह्म तब, माया है उसकी जागती।
भिन्न होकर ब्रह्म से, माया कभी सोती नहीं॥
बल सदा बलवान् में, और शक्ति शक्तिवान् में।
शिव से शक्ति न्यारी होकर, हँसती रोती नहीं॥
सत में जो सत्ता है, वह सत्ता नहीं सत से पृथक्।
सत की सत्ता साथ है, और साथ को खोती नहीं॥
राधास्वामी संग में, आई समझ अब रूप की।
भिन्न सागर से कभी, मूंगा नहीं मोती नहीं॥

सत्संग परमसन्त परमदयाल
पं० फकीर चन्द जी महाराज
26 - 5 - 80
काल चक्र क्या है

उस दिन से सत्संग करता रहता हूँ। बाकी बातें होती रहती हैं जो हालत तेरी है वह मेरी भी है। इन्सान के अन्तर किसी चोज़ की तलाश है उसको पता नहीं। कभी वह दौलत चाहता है, कभी वह मान चाहता है, कभी वह इज़्ज़त चाहता है, कभी औलाद चाहता है, कभी भक्ति चाहता है, कभी ज्ञान चाहता है, कभी कुछ चाहता है, कभी कुछ चाहता है। इस दुनिया में हम रहते हैं। मैंने आपको परसों बताया था कि मेरे काम करने की वज़ह क्या है? सारी दुनिया, दुनिया को बनाने वाले को पूजती है। कोई खुदा को पूजता है, कोई किसी को पूजता है, सन्तमत में सिर्फ़ गुरु को पूजा जाता है। अब आप हैरान होंगे कि जब यह बात मैंने सुनी तो मेरे दिल में कई किस्म के शकूक पैदा हुए। दाता दयाल मुझको लिखते हैं :—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं फ़कीर का नाम दीवाना, सबसे बढ़कर मानूं॥

जो फ़कीर मोहे दर्शन देवे, अपना भाग्य सराहूँ।
अपने तन की चाम की जूती, पग फ़कीर पहनाऊँ॥

अब मेरे दिल में एक सवाल पैदा होता था कि सन्तों को क्या हक़ है जो यह कहते हैं कि जो कुछ है सन्त है, फ़कीर है। फ़कीर उर्दू लफ्ज़ है सन्त हिन्दी लफ्ज़ है। इस बात को समझने में मेरी उमर खो गई। मैंने जो समझा वह मैं आपको बताये देता हूँ दाता दयाल जी की वाणी के अनुसार। मैं इस तलाश में भटकता फिरता था। मैंने सोने के ताज बनाये, चाँदी के हुक्के बनाये चंदन के सिंहासन बनाये रेशमी कपड़े बनाये उनमें सोने की तारें जड़ीं, बहुतेरा कुछ किया इस बात को जानने के लिए कि सच्चाई क्या है। इन सन्तों के पास क्या हक़ है जो यह कहते हैं कि सिवाय गुरु के, सन्तों के और किसी को नहीं मानते, बात क्या है? वह इस दुनिया को काल और माया कहते हैं। आपने राधास्वामी मत की किताबों में पढ़ा होगा उनमें काल और माया का ज़िक्र आता है कि नहीं आता! तो काल और माया में ही यह संसार बना हुआ है। सन्त काल और माया को नहीं मानते हैं। मानते हैं मगर उसकी पूजा नहीं करते वह इससे ऊपर जाते हैं। गुरु नानक साहिब ने उसका नाम अकाल पुरुष रखा है वह काल और माया से परे है। काल के मायने क्या हैं? जहाँ अकाल नहीं। काल नाम है हरकत का। जहाँ हरकत है वहाँ सुख और शान्ति की कभी उम्मीद मत रखो। जहाँ भी हरकत है वहाँ तबदीली होती रहती है और जितना भी ब्रह्माण्ड है यह सब हरकत में है, सन्तों का मार्ग है हरकत से परे। इसका मौजूदा सबूत मैं बिजली से देता हूँ। बिजली की बैटरी होती है, बैटरी में एक Electromotive force होती है और एक current होती है। उस अकाल पुरुष यानि Electromo-

यह भी झूला, तुम्हारे मन के अन्तर ज़िन्दगी है। हस्ती और है, ज़िन्दगी और है। ज़िन्दगी हरकत में है और हस्ती बेहरकती में है। इसका सबूत तुम्हारे जिस्म को chloroform दे दो, टीका लगा दो, काट डालो पता लगता है? नहीं तो साबित हुआ कि ज़िन्दगी और है और असली चीज़ हममें तुममें और है। हम असल में हैं वह और है। अगर वह और न होती सिर्फ़ ज़िन्दगी ही होती तो जब तुमको डाक्टर काटता था तो तुमको महसूस होना चाहिए था मगर नहीं होता था। डाक्टर ऑपरेशन करते हैं, टीका लगाते हैं या Chloroform सुंघा देते हैं फिर आपका जिस्म काट देते हैं, बड़े-बड़े ऑपरेशन कर देते हैं। इससे साबित हुआ कि जो चीज़ तुममें है वह कुछ और है और यह जो ज़िन्दगी है यह और है। ज़िन्दगी का नाम काल है, Creation, creater पैदा करने वाला है यह और है और जो इसका आधार है वह और है :—

चढ़ी पेंग तब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे।
कभी मिले तो जमघट देखी, बिछुड़ के हो गये न्यारे॥

अब देखो न परसों हम इकट्ठे हुए थे। इकट्ठे हुए और बिछुड़ गये यह संसार ही ऐसा है :—

एक दशा में नित जो बरते, कोई नज़र न आया।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया ऋषि मुनि बचन न पाया॥

जब तक इन्सान इस ज़िन्दगी में है शान्ति कहाँ, विश्राम कहाँ, हो ही नहीं सकता। हरबक्त वह चीज़ हरकत में रहेगी। सन्त हो, कुतुब हो, औलिया हो, ऋषि हो, मुनि हो, पीर हो, पैग़म्बर हो, अवतार हो, कोई भी हो जब तक इस कालचक्र में है तब तक वह बच नहीं सकता :—

पानी भया भाप को सूरत, धाया गिर कैलासा।
बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निवासा॥

तुम देखते हो सूरज समुद्र से पानी को सुखाकर के भाप बना देता है फिर वह भाप पहाड़ों से टकरा कर बरस जाती हैं और बरसा हुआ पानी फिर जम कर बर्फ बन जाता है, बर्फ पिघल कर दरिया बन जाता है दरिया बहकर फिर समुद्र में आ जाता है। हर जगह यह चक्र चलता रहता है :-

नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा।

वही पानी फिर समुद्र से उठा, फिर ऊपर गया, फिर नीचे आया :—

हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमाशा॥

दाता फरमाते हैं कि भई यह तमाशा हम खुद ही नज़र से देखते हैं :—

लकड़ी जल कर कोयला हो गई, कोयला राख और माटी।
माटी माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी॥
विष्टा अन्न अन्न भया विष्टा, सोई सब कोई खावे।
यह प्रपंच है अद्भुत न्यारा, कोई बिरला लख पावे॥

तुम देखो शहर का जितना गन्द होता है सब खेतों में जाता है। उसमें सब्ज़ी पैदा होती है, अनाज पैदा होता है और हम वही खाते हैं फिर हम टट्टी फिरते हैं यह संसार का चक्र चलता रहता है :—

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति लीला, कभी ऐसी कभी वैसी।
यह सब काल बली की माया, कभी जैसी कभी तैसी॥

वह कहते हैं कि यह सब जितनी सृष्टि है काल और माया की बनी है :—

पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी।
कभी जड़ मिल जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी॥

बड़े-बड़े पण्डित ऐसी ग़लती खाते हैं जिसका कोई हिसाब नहीं और बाज़ेदफ़ा मूर्ख से मूर्ख आदमी ऐसी बात बता देता है जो सबसे अच्छी होती है। हरजीत सिंह, तुमने मुझे बुलाया मैं इस ज़िम्मेवारी को महसुस करता हूँ। अगर आज मुझको इस हक़ीकत की, सन्तमत की तालीम की सच्चाई समझ में न आती तो शायद मैं पहला शख़्स होता जो नानक साहिब, सन्तमत, राधास्वामी मत के बरखिलाफ़ आवाज़ दे जाता। मगर आप लोग दुनियादार हैं, आप लोगों का इस तरफ ध्यान ही नहीं जाता क्योंकि आपके दिमाग़ के ऊपर काल का चक्र इतना पड़ा हुआ है कि उससे निकल नहीं सकते। फिर क्या होता है? जन्मते हैं और मरते हैं। आज किसी के बाप बने, कल किसी के बेटे बने, परसों किसी के कुछ बने, चौथे दिन किसी के कुछ बने। आवागमन है। मैंने आपको किताबों के हवाले से नहीं अपने तजुर्बे से साबित कर दिखाया। लड़की की मौत के ज़िक्र के मुताबिक मैंने आपको बता दिया जहाँ मैंने कहा वह वहाँ पैदा हो गई, माँ के मुतल्लक़ कह दिया। मेरा एक लड़का १८ साल का शाहदरजंग था वह मर गया मेरी औरत दो साल रोती रही। मेरी आदत है रात को दो-तीन बजे उठकर समाधि में जाता हूँ। जब मैं जाने लगा और उसको रोते हुए, सुबकते हुए देखा तो मैं उसके पास गया, बड़ा प्यार किया। मैंने कहा भगवान् काहे को रोती है? वृक्ष पर कितने फल लगते हैं सारे ही थाड़े होते हैं, गिर जाते हैं, गल जाते हैं। तेरे एक लड़का है, लड़कियाँ हैं। उसने कहा आप ठीक कहते हैं, आप अपना वक्त बाहर सत्संग में काट लेते हैं मेरा तो यही ओर-छोर है। बच्चों के कपड़े धो दे, यह कर दे, वह कर दे मेरा दिल नहीं लगता। तुम बताओ मेरा लड़का कहाँ गया है?

अब मैं क्या बताता उठकर समाधि में चला गया। समाधि से उठकर लेट गया। स्वप्न में मेरे सामने मेरा लड़का आया। मैंने कहा, तेरी मां रोती रहती है तू बता कि कहाँ गया है ? वह कहता है मैं सुनाम में लक्ष्मण दास पनवाड़ी के यहाँ गया हूँ। उस लक्ष्मण दास पनवाड़ी की सात लड़कियाँ थीं लड़का कोई नहीं था तो वह हमेशा मेरे इस लड़के को गोद में लेकर खिलाया करता था। उस लड़के का लक्ष्मण दास के साथ बड़ा प्रेम था। मैंने लक्ष्मण दास को लिखा कि तुम्हारे घर क्या लड़का पैदा हुआ है ? उसने लिखा कि लड़का पैदा हुआ था मगर वह २० दिन ज़िन्दा रहा और मर गया। अब आप समझ गये मेरी बात को ! आवागमन है।

सन्तों का मार्ग सिर्फ़ इस दुनिया से जीवों को निकालने का है। दुनिया ने सन्तमत को समझा नहीं। उन्होंने तो दुनिया को Socialism बना लिया। फ़र्ज़ करो मैंने वहाँ अस्पताल बना लिया या और कुछ बना लिया। क्या मैं अस्पताल बनाने से सन्त हो गया ? क्या स्कूल खोल देने से मैं सन्त हो गया ? यह बात नहीं है। अजोत सिंह, सन्तपना बिल्कुल मुख़्तलिफ़ है। तुमने अपनी ज़िन्दगी बग़ैर गुरु के गुज़ारी है सिर्फ़ किताबों को पढ़-२ के तुम्हारा दिमाग़ हिल गया है। अगर तुम्हें कोई क़ामिल गुरु मिला होता तो तुमको बता देता कि असलियत यह नहीं, यह है। मैं तुमको बता रहा हूँ कि असलियत यह है :—

समझत बने कथन नहीं आवे, मन बानी अलसानी।

वह कहते हैं कि कालचक्र का इतना खेल है कि लाख कोशिश करे मगर पूरी समझ नहीं आती, वाणियाँ काम नहीं करती, बुद्धि अलसा जाती है :—

कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी।

वह कहते हैं कि कौन किस को समझावे। इस राज़ को केवल कोई गुरु ज्ञानी हो समझ सकता है और कोई नहीं समझ सकता ;—

एक दशा में कोई न बरते, कभी बैठा कभी दौड़ा।
कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा॥

हरवक्त हम किसी न किसी ख़्याल में रहते हैं। तुम देखो न हरवक्त मन किसी न किसी तरफ लगा रहता है। दुःख भी होता है, सुख भी होता है, अच्छा भी होता है, भला भी होता है, मौत भी आती है, आमदनी भा आती है, ग़रीबी भी आती है। बड़े-२ सन्तों का हाल देखा :—

झूले की है विचित्र कहानी, कथा वारता न्यारी।
नर को हम समझावन आये, सुने न बात हमारी॥
दुःख सुख, सुख दुःख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया।

हमने क्या किया ? दुःख भी आता है, सुख भी आता है तो हमने दोपने बढ़ा लिये। आज तुमने लड़के से प्यार बढ़ा लिया कल को लड़का मर जायेगा तो तुम रोओगे। आज तुमने औरत से प्यार बढ़ा लिया कल कोई औरत में नुक्स आ गया तो तुम्हें गुस्सा आ गया। बाप ने लड़के को पढ़ाया लड़का गुस्ताख़ हो गया अब बाप गुस्से में आ गया। यह संसार का चक्र है ऐसे ही चलता है। जब से दुनिया बनी है हर जगह हमेशा लड़ाई-झगड़े होते रहते हैं :—

द्वन्द भाव ले जगत रचाना, द्वन्द के फांस फँसाया॥
इस द्वन्द में आकर इस दोपने में आकर हम फँसते हैं।
मन बुद्धि और चित्त हंकारा, सो झूले की रसरी।
दो लड़ त्रय लड़, चौलड़ बन आई, जीव निवल को जकड़ी॥

यह बुद्धि जो हमारी है, मन, बुद्धि चित्त, अहंकार

यही हमारे दुःख का कारण हैं। तभी बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि दस द्वारे लांघो तब आगे सद्गुरु मिलता है दुनिया ने समझा नहीं। दस द्वारे क्या हैं? पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। लख चौरासी क्या है? किसी ने गिनी है लख-चौरासी? छः चक्कर जिस्म के, छः चक्कर ऊपर के बारह, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, आत्मा और बुद्धि सात, $12 \times 7 = 84$। हमारा सिर चौरासी चक्कर में फिरता रहता है। किसी न किसी वक़्त, कभी किसी हालत में है, कभी किसी हालत में है। यही हमारी चौरासी है। हम दुःख भी भोगते हैं, सुख भी भोगते हैं, आनन्द भी लेते हैं, खुशी भी लेते हैं :—

जकड़े माया के फन्दे में, रोये और चिल्लाये।

मैं अशान्त था, रोता था। जब दाता के पास जाता था तो रोता था। जब वहाँ से आता था तब भी रोता था, प्रेम करता था, प्रेम से घुँघरू बाँध कर नाचा करता था बहुतेरे मैंने स्वांग किये हैं। छः साल मैंने नमक नहीं खाया न नमक की कोई चीज़ खाई। छः साल दूध, न दूध से बनी कोई चीज़ खाई इस ख़्याल से कि मुझे शान्ति मिल जायेगी, कोई चीज़ मिल जायेगी। उसके पीछे मैं दौड़ता था मगर वह चीज़ मुझे उन कर्मों से नहीं मिली। वह चीज़ मुझे कैसे मिली आगे बताता हूँ :—

शोर मचाये बहु चिल्लाये, छूटन विधि नहीं पाये॥

जिसको शान्ति नहीं मिलती है वह दौड़ता फिरता है। तुमने कितने पौंड खर्च किये तुम अमीर आदमी हो (You are a rich man) तुमने इतना रुपया खर्च किया, क्यों किया? इसवास्ते कि तेरे अन्दर किसी चीज़ की तलाश है, तू उस तलाश के पीछे फिरता है। वरना कौन रुपया खर्च

करता है। मैंने हज़ारों रुपये खर्च किये, क्यों किये ? क्योंकि किसी चीज़ की तलाश थी। कौन किसी को देता है कौन किसी से लेता है अब समझ गये मेरी बात को कि मैंने क्या कहा :—

तब दयाल का दाया लागा, सन्तरूप धर आया।

कौन दयाला ? Electromotive force current का भी अवतार होता है जो अवतार होता है वह Creater का होता है। उसके एक हाथ में तलवार होती है और एक हाथ में कटार होती है। जहाँ इन्सान सीधे रास्ते से नहीं चलता है उसे तलवार से मार देता है। राम हुए, कृष्ण हुए उन्होंने ऐसा किया। मगर सन्त अवतार के हाथ में तलवार नहीं होती वह सिर्फ़ वाणी कहता है, वचन कहता है जो उसके वचन को मान जाता है वह तर जाता है :—

तब दयाल को दाया लगी, सन्त रूप धर आया।
राधास्वामी अचल मुकामी, शालिग्राम कहाया॥

अपने गुरु का नाम लेते हैं। कौन है वह अचल मुक़ामी। जो हरकत में नहीं आता। वहाँ से सन्त की किरण आती है वह जीवों को चेताता है। वह यह नहीं कहता कि तुम लड़ो, झगड़ा करो। वह उनको अपने घर ले जाने के लिए, किनके लिए हंसों के लिए, जो यह समझते हैं कि इस दुनिया में सुख नहीं है और सुख कहाँ है ? उनको चेताता है, सन्त दूसरों के लिए नहीं है। जिस तरह डाक्टर सिर्फ़ बीमारों के लिए हैं, रोटी सिर्फ़ भूखों के लिए है, पानी सिर्फ़ प्यासों के लिए है। हर शख़्स सन्तमत का अधिकारी नहीं है। हम लोग सन्त बनके दुनिया को लूटते हैं और ख्वाहमख्वाह अपने आपको सन्त मशहूर करके, दुनिया को पागल बना के अपने पीछे लगा लेते हैं, यह ग़लती है। मैं साफ कहता हूँ सन्तमत

बिल्कुल-बिल्कुल मुख़्तलिफ चीज़ है। यह सिर्फ़ उनके लिए है जो सिर्फ़ दुनिया में आकर के महसूस करते हैं कि यहाँ दायमी सुख नहीं है। सुख के साथ दुःख, दुःख के साथ सुख, आनन्द के साथ बेआनन्दी, फ़िक्र के साथ बेफ़िक्री, चिन्ता के साथ अचिन्तपना, जो आदमी इसमें रहकर के अपने आपको आज़ाद करना चाहता है उसके लिए सन्तमत है न कि आम दुनिया के लिए। आम दुनिया के लिए काल का चक्र है जो चलता रहता है कभी मरता रहता है, कभी रोता रहता है, कभी कुछ होता है, कभी कुछ होता है। कहीं लड़ाइयाँ हैं, कहीं पर उपकार है, कहीं पर नेकी है, कहीं बदी है, कहीं कुछ है कहीं कुछ है। देखते नहीं हो ऐक्सीडेण्ट हो जाता है कोई ऐसी प्रकृति वाले जाते हैं जो ज़ख़्मी और मरे हुए लोगों की जेबों में से पैसे निकालते हैं लूट के ले जाते हैं। कुछ ऐसी प्रकृति वाले होते हैं जो उनको रोटी-पानी तथा दवाई देते हैं, कुछ ऐसे आदमी होते हैं जो यह देखते हैं कि यह किस वजह से हुआ जिसने वह ऐक्सीडेण्ट किया उसको मारने के लिए दौड़ते हैं। कोई ऐसे होते हैं जो यह कहते हैं कि ऐसा वाक्या फिर न हो वह सन्त कहलाते हैं। इस दुनिया में दुःख और सुख दोनों चलते हैं। कोई ऐसा आदमी नहीं जो यह कहे कि मैं कभी दुःखी नहीं रहूँगा हमेशा सुखी ही रहूँगा। ज़िन्दगी में तब्दीली आती रहती है उनके लिए यह सन्तमत आता है। चूँकि तुमने मुझे बुलाया, इतना रुपया खर्च किया मैं महसूस करता हूँ मैं चाहता हूँ कि अपनी डयूटी पूरी कर जाऊँ, तुम्हारे सामने जो कुछ क़ुदरत ने मुझको बख़्शा है वह आपको बता जाऊँ, बाकी जितनी बातें हैं सब रोचक हैं और भयानक हैं। जो कुछ किसी को मिलता है वह उनका अपना विश्वास होता है।

शान्ति कैसे मिली वह बताते हैं :—

खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ ॥

वह कहते हैं सुरत-शब्द का योग कर, मैं करता था मगर मुझे समझ नहीं आती थी। इस समझ देने को, सुरत-शब्द योग की बढ़ाई बताने को गुरु ने मुझे यह काम दिया और कहा था कि तुमको सच्चा सदगुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। अब जब सत्संगी कहते हैं कि मैं मदद करता हूँ, उनके स्वप्न में उनके जाग्रत में मगर मेरे बाप को भी पता नहीं होता इससे मेरी आँखें खुल गई फिर क्या हो गया कि वह जो मेरे मन का चक्कर था, जिस मन के चक्कर में आकर मैं रोता था, दुःख उठाता था, चिल्लाता था वह ख़तम हो गया। मेरी समझ में आ गया कि जिस तरह मैं किसी के अन्दर नहीं जाता उसी तरह जो कुछ उनके अन्दर प्रकट होता है वह उनकी अपनी कल्पना से फ़कीर चन्द को बना लेते हैं। हम अपनी ही कल्पना से आप दुःखी और सुखी होते हैं यह वह राज़ है जिसे मेरे सिवाय किसी महात्मा ने नहीं बताया। सबने इस बात को पर्दे में रखकर अपने डेरे बनाये, अपनी जायदादें बनाई, अपनी जागीरें बनाईं, अपने लड़कों को या अपने भाइयों को दे गये लेकिन हमको सच्चाई नहीं बताई, मगर उनका कोई क़सूर नहीं है क्योंकि दुनिया को सच्चाई की ज़रूरत नहीं है। मेरे पास इतने आदमी आते हैं क्या इस मन्तव के लिए आते हैं? किसी के पुत्र नहीं है, किसी के बेटा नहीं है, किसी की नौकरी नहीं है, किसी के पास धन नहीं है, इस काम के लिए मेरे पास आते हैं। तुम्हारी औरत ने मुझको चिट्ठी इसवास्ते लिखी कि उसके बच्चा नहीं था और वह चाहती थी कि मेरे बच्चा

हो जाये। यह दुनिया है। मन्तमत कुछ और चीज़ है तुमको समझाये देता हूँ। मैं समझता हूँ कि तुम शायद मेरी बात को न समझ सको अगर समझ भी सके तो तुम अभी वहाँ ठहर भी नहीं सकोगे क्योंकि तुम्हारा वक्त नहीं आया। हर चीज़ का समय होता है मगर मैं तुम्हें बताये जाता हूँ ताकि तुमको फिर किसी और के दरवाज़े पर जाकर के टिकट न लेने पड़ें कि आओ दिल्ली से लंदन और लंदन से दिल्ली। देने को खुशी से अपनी मर्ज़ी से देवे मैं किसी आदमी को अज्ञान में रखकर उससे पैसा लेना नहीं चाहता। जो जिसकी मर्ज़ी चाहे मन्दिर में दान दे दे मगर अपने लिए तो मैं लेता ही नहीं हू, बात सच्ची कहता हूँ। तो वह कहते हैं कि झूले से बचावें :—

कर सतसंग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।

वह कहते हैं कि इसका राज़ किसी गुरु के पास है। तुम गुरु ग्रन्थ साहिब को पढ़ो, कबीर ने सब जगह लिखा है पूरा गुरु-पूरा गुरु। लिखा है कि नहीं लिखा है? हरएक आदमी कहता है कि मेरा गुरु पूरा है। पूरे गुरु के मायने हैं पूरे ज्ञान के, पूरे राज़ के, जहाँ से जिसको पूरा ज्ञान और शान्ति मिल जाये उसके लिए वही पूरा गुरु है, बाहर नहीं। भूले हुए हो हरजीत सिंह, तेरी अपनी आत्मा तेरा असला गुरु है। बात सच्ची कहता हूँ कोई झूठी बात नहीं है। मुझको तो अक़्ल तुम लोगों से आई, सत्संगियों ने मुझको तार दिया अब मै उनकी सेवा करता हूँ। बूढ़े-२ आदमी सत्सगी जिनको रोटी खाने के लिए नहीं मिलती उनको वहाँ नौकरी देता हूँ, तनख़्वाह देता हूँ। दो-दो घण्टे, चार-चार घण्टे Dispensery करते हैं उनकी सेवा करता हूं :—

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।

जिसकी मर्ज़ी हो बात करे जिसकी मर्ज़ी हो बात न करे। बस मैंने यह समझा :—

अब की चूक मौज नहीं ऐसी, त्याग काल की आसा।

काल क्या है ? हमारा मन यानि मन के पीछे न लग फ़कीर चन्द। अब की मौज नहीं है इसी जन्म में तेरा काम हो जायेगा, काल के पीछे मत दौड़ :—

अब की चूक मौज नहीं ऐसी, त्याग काल की आसा।
आज का साधन आज ही कर ले, कल को होगा उदासा॥

यह नर शरीर सुर को भी दुलभ है।

बरछे आये, कुहाड़ियां आईं, नेजे आये, फिर तलवारें लीं, फिर बन्दूकें निकलीं, तोपें निकलीं, अब क्या निकला ? एक बम फेंको सारा अमेरिका गया, सब काम जल्दी हुआ न। आगे Light जगमग जगाते थे, जुगनू जलते थे, दीवे जलते थे फिर Lamp आ गये अब क्या है ? बिजली का एक बटन दबाओ सारा इंग्लैंड रौशन है।

इसी तरह से कलियुग में जो मुक्ति के ख़्वाहिशमंद हैं और अपने घर जाना चाहते हैं उनके लिए आसान तरीका यह है कि किसी कामिल गुरु का सत्संग मिल जाये :—

गुरु को ढूंढ तेरे भले की कहूँ।
पूरा गुरु तो ढूंढ तेरे भले की कहूँ॥

यह स्वामी जी की वाणी है। तो दुनिया चक्कर में आ गई है। कोई व्यासिया बन गया, कोई आगरिया बन गया, कोई होशियारपुरिया बन गया। यह सन्तमत डेरों में बँट गया। यह दुनिया का व्यवहार है इसके बिना हमारा गुज़ारा नहीं है व्यवहार करो मगर उसमें फँसो नहीं। सारी बात इतनी सा है और कुछ नहीं। जब तक ज़िन्दगी है तब तक तुम व्यवहार से जाओगे कहाँ ? जब तक जान है कहाँ

भाग कर जाओगे ? दुनिया में रहो, बीबी रहे, बच्चे रहें, भाई रहें, मां रहे, बाप रहे, सब रहें मगर 'हथ कार वल दिल यार वल' यह समझ कर कि हमारा देश नहीं है। मुझे कहा करते थे :—

यह तो नहीं तेरा देश, देश है बेग़ाना।
यहाँ सब बेग़ाने बसे, कोई नहीं यगाना॥
गुरु ने तुझे उपदेश दिया और तुझे चेताया।
सन्त पन्थ धार हिये कटे मोह माया॥
लूट पड़ी लूट से बचाले धन अपना।
सह ले काल कर्म चोट, सोध ले मन अपना॥
राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारण आये।
शीश चरण में उनके झुकाकर, अपना काज बनाये॥

तो मैंने यह समझा :—

बार-बार नहीं अवसर प्रानी, काल महा दुःखदाई।

जन्मना, मरना! अभी आप जवान हैं आपको उस तक्लीफ़ का पता नहीं जो बूढ़े आदमी को होती है। मैं बूढ़ा हो गया हूँ मुझे पता है कि क्या तकलीफ़ होती है। एक गुरु सोने के कड़े पहनता है या अमीर है, धनवान् है वह एक दुःखी ग़रीब की हालत को क्या जानता है कि उसके साथ क्या बीती ? माफ करना मेरी बात को। एक आदमी धनी है, पैसा है, इज़्ज़त है, मान है वह ग़रीब की क्या क़दर जानता है, ग़रीब दुःखी हैं जिनको पेट के लिए रोटी नहीं है, जिनके सात बच्चे हैं पैसा नहीं है वह उनके दुःखों को क्या समझता है। इसवास्ते जो सन्त होते हैं वह हमेशा यह करते हैं :—

गुरु नहीं भूखा तेरे धन का,
उन पर धन है राय रतन का।

पर तेरा उपकार करावें,
भूखे नंगे को दिलवावें ।
दया मेहर इन की तू पावे ।

ऐसे-२ शब्द उन्होंने लिखे हैं। जो गुरु चेले का खाता है वह गुरु नहीं हैं। हर जगह, हर गद्दी में सर्कल होता है। एक इनर (अन्दरूनी) सर्कल होता है, दूसरा आउटर (बाहरी) सर्कल होता है। इनर सर्कल में गुरु की यह ताक़त नहीं है कि इनर सर्कल वालों को कुछ कर सके क्योंकि वह गुरु के ऐबों को, ग़लतियों को जानते हैं। मैंने इसवास्ते न इनर सर्कल रखा, न आउटर सर्कल रखा। बिल्कुल आउटर या इनर सब एक है। जो बात बिल्कुल clear है वह साफ़ कर देता हूँ कि भई यह बात ऐसे नहीं है ऐसे है और अपने आप को पाक रखता हूँ, किसी का कोई लिहाज़ नहीं। किसी का खाता नहीं। अब यहाँ से गया हूँ जहाँ-२ मैंने खाना खाया है वहाँ दिया है। अब किसी अमीर के घर खाना खाऊँ और उससे कहूँ कि पैसे ले ले तो बुरा लगता है मन्दिर में जाकर उतने पैसे दे दूँगा। मैं प्रेम की क़दर ज़रूर करता हूँ। आठ या नौ साल का एक लड़का अपनी टोपी लेकर मेरे पास आया कहने लगा बाबा यह टोपी तेरे वास्ते है। मैंने कहा ले आ बच्चा मैं पहन लेता हूँ। अब उस बच्चे की टोपी थी हालाँकि मैं स्वांग बना हुआ हूँ मगर मैंने टोपी पहनी हुई है क्योंकि मैं प्रेम की क़दर करता हूँ। अब आप समझते हो न प्रेम की क़दर करनी चाहिए, जो प्रेम की क़दर नहीं करता वह पतित है। राम ने भिलनी के जूठे बेर खाये थे। लक्ष्मण को भी उसने दिये मगर लक्ष्मण ने खाये नहीं, पीछे फेंक दिये। रामायण कहती है कि वह बेर संजीवनी बनी। जब लक्ष्मण लड़ाई के मैदान में मूर्छित

हुआ तो हनुमान वही संजीवनी लाया और उसी के पत्ते दिये जिससे वह बच गया। मेरा मतलब है कि प्रेम से, सच्चे दिल से कोई चीज़ देता है तो उसके प्रेम की कदर करनी चाहिए। तुम किसी को देते हो, भाई को देते हो प्रेम से दो लोकलाज से नहीं। प्रेम और मोहब्बत से किसी की मदद करो वह तुम्हारे लिए और उसके लिए बड़ का वृक्ष बन जायेगा। कई आदमी कर्ज़ा लेकर लड़कियों की शादी करते हैं, सारी जिन्दगी कर्ज़ा नहीं उतरता। आप लोगों को तो पैसा काफ़ी मिलता है परवाह ही नहीं करते, हिन्दुस्तानियों को पूछो कि क्या होता है। लड़कियों की शादी हो जाती है, कर्ज़ा उतारते हैं वह कर्ज़ा उतरता नहीं, मां-बाप अलग कुढ़ते रहते हैं जिन लड़कियों को देते हैं उनको भी कुछ फ़ायदा नहीं पहुँचता है। इसवास्ते मैंने तालीम को बदला है। नौजवानों को कहा करता हूँ कि रण्डी की कमाई खाना कैसा लगता है? जो लड़का जवान होकर ससुराल से पैसा मांगता है कि मुझे T.V. दो वह रण्डी की कमाई नहीं खाता तो क्या खाता है? जवाब दे कोई बोलता क्यों नहीं। जिनकी लड़की है, वह जो चाहें दे दें। मैं गृहस्थियों के लिए इस बात पर ज़ोर देता हूँ लड़कों का यह फ़र्ज़ नहीं है कि T.V. मांगें, साइकिल मांगें या जो मर्ज़ी हो वह मांगें लड़की वाले खुशी से जो देना चाहें दें उसमें कोई बात नहीं है कितनी औरतें दहेज के लिए जलकर मर गईं उनको सासों ने उनको तंग किया। इसलिए दुनियादारों के लिए मैंने तालीम को बदला है। आज का सत्संग तुमको प्रमाण के लिए है। दुनियादारों के लिए मेरा सत्संग यह है कि अपने ब्रह्मचर्य का पालन करो, अपने वीर्य को बेफायदा बेकार मत करो, घर में शान्ति रखो, शादी व्यवहार में

लोकलाज में मत आओ ;—

लोक लाज काज व्यौहारा, ये मोहे जग फंदा डारा।

स्वामी जी ने लिखा है कि हम लोकलाज में आ जाते हैं। नहीं समझ में आती है, मैंने क्या कहा है? तो दाता मुझको कहते हैं :—

'अब की चूक मौज नहीं ऐसी, त्याग काल की आसा।
आज का साधन आज ही कर ले, कल को होगा उदासा॥

अब मैं साधन क्या करता हूँ? मन को छोड़ जाता हूँ। अब मुझे पता लग गया कि सहस्रदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न जितने दर्जे हैं ये सारे मन के खेल हैं। यह कल मैंने तुमको बताया कि जिस किस्म के जैसे किसी के ख़्यालात होते हैं वैसा उसको नज़र आता है, जैसे जिसके संस्कार होते हैं उसके मुताबिक़ उसके अन्दर खेल नज़र आते हैं, सबके एक जैसे नहीं हैं। किसी को कोई दृश्य नज़र आता है, किसी को कोई नज़र आता है। तो इसके आगे प्रकाश और शब्द है। सिर्फ़ प्रकाश में चले जाना आत्मावस्था है जिसको सोहंकार कहते हैं। सोहंकार क्या है? हम भँवर-गुफा को बोलते हैं। हम ज्ञान हासिल कर जाते हैं वहाँ ठहरते हैं मगर मन हमको फिर खींच लाता है। हम फिर मन को छोड़कर वापिस जाते हैं लेकिन मन फिर हमें खींच लाता है और फिर हम ऊपर जाते हैं। तो यह जो चक्कर आने-जाने के लगते हैं उसका नाम है भँवरगुफा। जब इसके बाद परिपक्त हो जाता है तो भँवरगुफा वाला सब छोड़ जाता है। फिर क्या होता है? वह अपने रूप को जान जाता है कि मैं प्रकाश और शब्द स्वरूप हूँ और फिर वह गिरता नहीं मगर प्रारब्ध कर्म के अनुसार दुनिया में जो काम होता है वह करता है लेकिन उसमें फँसता नहीं है। यही जीवन्मुक्त

अवस्था है :—

बार बार नहीं अवसर प्रानी, काल महा दुःखदाई।
जो कोई करे काल की आसा, सो पाछे पाछेताई॥

एक काल तो दुनिया को पैदा करता है, दूसरा काल तुम्हारे अन्दर तुम्हारा मन है। पहला तो भगवान् का काल है जो मन के पीछे चलता है वह दुःख उठाता है।

राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारन आये।
सीस चरन में उनके झुकाकर, अपने काज बनाये॥

हरजीत सिंह, तूने मुझे बुलाया खुश हो कि मैं नहीं गया। वहाँ जाता ३५० या ४०० पौंड (रु०) लेकर जाता, पिछली दफ़ा आया था तीन सौ पौंड (रु०) इसने दिये थे मैंने उसकी परवाह नहीं की। मैंने कहा सिर्फ़ दो या तीन घण्टे के लिए आऊँगा। वहाँ नहीं गया सिर्फ़ तेरे पास आया इस ख़्याल से कि तेरे को सही रास्ता मिल जाये, तू टक्कर ना मारता फिरे। जो कुछ है तेरे अपने अन्तर है। बाहर के गुरु ने तो उपदेश देना है असली गुरु तेरे अपने अन्तर रहता है, बाहर नहीं रहता। गुरु को जो बाहर समझते हैं वो कभी मंज़िल पर नहीं पहुँचते। स्वामी जी ने लिखा है :—

गुरु को ऊपर-ऊपर गाता,
गुरु को दिल भीतर नहीं लाता।
बाहरी ऊपरी गुरु से लगन करे क्या प्रानी,
भीतरी गुरु से लगन न लागी।

ऐसे-२ शब्द लिखे हैं। कल मैंने मिसाल भी दी थी। छोटा बच्चा होता है मां नंगी होती है दूध उसके मुँह में देती है, उसको पालती है मगर जब लड़का जवान हो जाता है तो क्या मां उसके सामने छाती खोल सकती है? नहीं न खोलती है, न नंगी होती है हालाँकि उसके पेट से जाया

हुआ है लेकिन उसको समझ आ गई। जब अज्ञानी होते हैं तो गुरु लोग उनको अपनी छाती से लगाते हैं। दाता ने मुझको लगाया मुझे लिखते हैं :—

फ़कीर मैं तेरे दर्शन का प्यासा,
आजा-२ दर्श दिखाजा मत कर मोहे निरासा।

ऐसे-२ शब्द उन्होंने मुझे लिखे थे। जिस तरह से मां बच्चे को पालती है उसी तरह उन्होंने मुझे पाला। उन्होंने यह काम मुझे सन्तमत समझाने के लिए दिया था, इस उमर में दाता दयाल तो हैं नहीं इसलिए जो सत्संगी मुझे कहते हैं कि मेरा रूप उनकी मदद करता है मैं उन सत्संगियों को अपना सच्चा सद्गुरु मानता हूँ। क्योंकि उनकी दया से मैं सन्तमत को समझ सका। आज मैंने आपको बहुत कुछ कह दिया कोई क़सर नहीं छोड़ी :—

राधास्वामी, राधास्वामी, राधास्वामी गाना,
मन, बच, कर्म से भक्ति कमाना, झूले बाहर आना।
राधास्वामी क्या हुआ ?
राधा आद सुरत का नाम, स्वामी आद शब्द पहचान।

सुरत का अपने अन्तर शब्द में लगा देना ही राधा-स्वामी नाम का गाना है। मुँह से तुम हज़ार दफ़ा राधा-स्वामी-राधास्वामी, पाँच नाम - पाँच नाम, राम - राम, अल्ला-अल्ला करते रहो कोई फ़ायदा नहीं। यह अमल कर अपने रूप में आप ठहर जाना यह मेरी समझ में आया है। दाता ! आपने कहा था तालीम बदल जाना जो मेरी बुद्धि ने समझा मैं वह कह चला। मैं ग़लत हूँ या सही हूँ इसका मुझे पता नहीं। दोस्तो ! अगर मैं ग़लती पर हूँ तो मैं इसका ज़िम्मेवार नहीं। दाता दयाल जी ज़िम्मेवार हैं या बाबा सावन सिंह जी ज़िम्मेवार हैं, उन्होंने मुझे यह काम दिया।

मुझे तो गुरु बनने की ख़्वाहिश नहीं थी, मैं तो सिर्फ़ सन्तमत को समझना चाहता था कि सन्तमत वालों के पास क्या हक़ है, मैं एक ब्राह्मण के नाते अगर आपको गुरु नानक के बरखिलाफ कुछ कहूँ तो आपको गुस्सा लगेगा, आप मेरा सिर काटने के लिए तैयार हो जायेंगे। मैंने इनका खंडन सुना, राम, कृष्ण को काल का अवतार कहा, दत्तात्रेय नहीं पहुँचा, व्यास नहीं पहुँचा अब कौन अपने बुजुर्गों की बुराई सुन सकता है ? मगर दाता दयाल जी से मेरा विश्वास नहीं टूटा। मैंने प्रण किया था कि मैं इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा दुनिया को बता जाऊंगा। दाता ने शायद मेरे कर्म बचाने के लिए यह काम मुझे दिया। तुमने मुझे बुलाया तो मैंने दो-चार सत्संग पहले दिये, अब दे चला, कल एक और दे जाऊंगा। बाक़ी रह गया यह सुनो :—

कामी तरे क्रोधी तरे, पापी तरे अनन्त।
आन उपासक, कृतघ्न, तरे न राम रटन्त ॥

कामी, क्रोधी, लोभी, मोही सब की मदद हो सकती है मगर जो ग़ैर को पूजता है वह जो कृतघ्न है, वह बेशक नाम जपता रहे नहीं तरेगा। हमारे मां-बाप ने हमको पैदा किया अगर हम उनके बरखिलाफ़ जाते हैं तो हम कृतघ्न हैं। दोस्त ने आपकी मदद की है अगर आप उसके बरखिलाफ़ हो जाते हैं या आप उसकी इमदाद नहीं करते तो आप कृतघ्न हैं। मैंने इस सच्चाई को सन्तमत से पाया। दाता दयाल जी की दात थी, राधास्वामी मत से पाया। इसवास्ते मैं राधास्वामी नाम लेता हूँ। मैं राधास्वामी मत के दायरे में हूँ और तमाम राधास्वामी मत वालों को या सुरत-शब्द योग के अभ्यासियों को चाहे वे राधास्वामी हैं या नहीं हैं हम सबकी

इज़्ज़त करते हैं, सबका मान करते हैं, सबका शुक्रिया अदा करते हैं। जो सेवा अपनी तरफ से हो सकती है करते हैं। इसवास्ते तुम नौजवान हो अपने घरों में शान्ति से रहो, दुनियादारी की बात है। यह तो मैंने हरजीत सिंह को सत्संग कराया। आप लोगों में से जिसने समझा उसने समझा, जिसने नहीं समझा उसने नहीं समझा मैं उसका ठेकेदार नहीं हूँ। मैं तो सर्विस के लिए आया हूँ और यहाँ सात जून तक रहूंगा फिर बर्मिंघम चला जाऊँगा। बर्मिंघम से जर्मनी और जर्मनी से फिर वापिस आकर दिल्ली रवाना हो जाऊंगा।

सबको राधास्वामी !

सूचना

परमसन्त हज़ूर मानव दयाल डा. आई. सी. शर्मा जी महाराज १८ और १९ अप्रैल १९८५ को सलवान हायर सेकण्डरी स्कूल देहली में नीचे दिये गये समय के अनुसार सत्संग देंगे :—

१८-४-८५ शाम को ४ बजे से ६ बजे तक।

१९-४-८५ सुबह ८-३० बजे से १०-३० बजे तक।

जनरल सेक्रेटरी
मानवता मन्दिर, होशियारपुर।

सत्संग सन्त तारा चन्द जी महाराज

दिनोद हरियाणा,

सलवान पब्लिक स्कूल,

राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली

दिनांक 4-10-1984

राधास्वामी !!! जितने स्टेज पर बैठे हुए हैं, पहले मैं उनकी बन्दगी करता हूँ वे मेरे पूजनीय हैं, वे मेरे बुजुर्ग हैं। वे मेरे सतगुरु के स्वरूप हैं। ये जितने सत्संगी, प्रेमी भाई हैं, मेरी माताएँ, बहनें हैं सबकी बन्दगी करता हूँ। मैं हरियाणा का रहने वाला हूँ। सीधी-सादी भाषा है। मैं जो बातें कहूँ, उन्हें नोट करना, जो ग़लत हों उन्हें त्याग देना। थोड़ा सा अपना तजुर्बा बताऊंगा। सतगुरु जो मिल जाता है तो फिर लेखा निबड़ जाता है। अब महाराज मानव दयाल जी ने जो बातें कहीं, बिल्कुल ठीक कहीं, बहुत अच्छी कहीं। विद्वान् भी हैं, रूहानी दौलत के मालिक भी हैं। समझ गया जैसे ज़मींदार कहते हैं बरसातें तगड़ी हुई हैं। अब तो मैं कहूँगा कि बूँदाबाँदी सी है। समझ गया मैं तगड़ा हो गया, बूँदा-बाँदी हो गई है। अब बात यह है कि छोटी उमर थी,

ख़्याल उनको ले जाता है अपने अन्दर में। 'क्यों बाहर की आँखों से देखता है ये सब झगड़ा झूठा है, अन्तर की आँखों से देखो घट में खेल अनोखा है। मन माया की न करो दुहाई पाँच पचीस ने लूटा है, ताराचन्द भव पार उतर गया सतगुरु सिर पर बैठा है।।' पार उतरना है तो सतगुरु को सिर पर रखना पड़ेगा। आहिस्ते-२ मन को रोको। 'करो सुखमना ध्यान चित्त की वृत्ति एकाग्र करो, सुरति की वृत्ति असमान।। आप अजपा घट में होता ता किंवा होती तान ताराचन्द की मिटै चौरासी मिटै जी का आवन जान।।' चौरासी मेटना है तो सतगुरु को अपने आगे ले के चलो तो बेड़ा पार है। तो मैंने क्यों जफ्फी भरी? मैं गया, मैं देखता रहा। मुझे मानव दयाल जी की चमड़ी से प्यार नहीं मुझे उनके गुणों से प्यार है। मैं समझता हूँ कि ये परम दयाल जी के रूप हैं। अगर कोई भाई यह कहे कि माताजी कहने से पार उतर जाएँगे? माता जो कहने से रामकृष्ण परमहंस पार उतर गये, माताजी कहने से कबीर पार उतर गये, माताजी कहने से दादू, पलटू उतर गये। दाताजी पार उतरे, स्वामी जी पार उतरे, फ़कीर चन्द जी उतर गए माताजी कहने से। कौन नहीं उतरा मेरे भाइयो! माताजी कहना कोई मामूली बात नहीं है। हर एक के वश की बात नहीं है। मुझे मानव दयाल जी से कोई गरज़ नहीं। मेरे पास ५०-६० लाख की सम्पत्ति है। मैं संगत में कहता हूँ, धर्म से कहता हूँ कि मैं इनका कुत्ता बनकर रह सकता हूँ। मैं इनका भिखारी बनके रह सकता हूँ। क्यों? मैंने इनका त्याग देखा। लोग कहा करते थे कि कबीर के पास २१ करोड़ रुपया लेकर धर्मदास आया। कबीर कहने लगा सारा पुन्न कर दे पुन्न। नामदेव ने सारी ज़िन्दगी नाई का काम किया,

धन्ना ने खेती का काम किया। मेरे ज़मीन है, उसमें गुज़ारा करता हूँ, न मेरे पास घड़ी है, न अँगूठी। मेरे लत्ते (कपड़े) देखते हो, मैं इनकी बराबरी नहीं कर सकता। अगर मैं मानव दयाल जी की रीस करूँ तो मेरी ग़लती है। साधन की रीस करो, भजन की रीस करो। इन्होंने ठोकरें मारीं, बड़ा भारी त्याग किया। मैं कहता हूँ त्याग क्या करेगा, भजन में दिल लगा नहीं तो सत्संग क्या करेगा! परम दयाल जी ने मानवता की रक्षा की। परम दयाल जी को पूरा समझो उनके रूप का ध्यान करो, काम न हो तो मेरी दाढ़ी उखाड़ लेना। मैं ठोंक बजाकर कहता हूँ महर्षि जी का पोता हूँ। मैं परम दयाल जी को हाजिर-नाजिर मानता हूँ। उन पर मेरा पूरा विश्वास है। उन्हें हाजिर-नाजिर समझो। ज़्यादा क्या कहूँ, ज़्यादा कही कीचड़ हो जाती है। चाहे सारी रात सत्संग करते रहो चाहे सारी ज़िन्दगी सत्संग करते रहो, जब तक पर्दा नहीं खुला ज़िन्दगी सब बेकार है। जब तक सतगुरु न मिला तब तक ज़िन्दगी बेकार है। गुरु बग़ैर कुछ नहीं मिलता। पार्वती जी जब तप करने लगीं तो ऋषि-मुनि उनके पास गए और पूछा कि पार्वती किसके लिए ध्यान करती हो? पार्वती ने कहा शिवजी के लिए। ऋषियों ने कहा शिवजी तो ध्यान लगा लेंगे तो समाधि नहीं खोलेंगे। पार्वती ने कहा कि मेरा प्रण है जब तक शंभु नहीं मिलेंगे मैं कुँआरी रहूँगी। 'जा पर जाकर सत्य सनेहू सोई तेहि मिलै न कछु सन्देहू', तुम कबीर का ध्यान करो, नानक का ध्यान करो, दादू का ध्यान करो वह अवश्य मिलेगा। सच्चा प्यार हो, न तुम हिन्दू हो न तुम मुसलमान हो, न तुम सिख हो, न तुम ईसाई हो। तुम खुदा के बेटे हो। चाहे जिस नाम से याद करो। मांस-मछली, शराब-कबाब, विषय-विकार

से बचने की कोशिश करो। पार्वती से कहा गया कि तुम्हारी शादी विष्णु से कर दी जायेगी क्यों शिव से विवाह करना चाहती हो? उन्होंने शिवजी की निन्दा की परन्तु पार्वती ने नहीं माना। पार्वती ने कहा कि हमारे गुरु 'नारद जी' की निन्दा करोगे तो छाती में टक्कर मारूंगी। लानत है उस शिष्य को जो अपने गुरु की बुराई सुनता है। 'गुरु की निन्दा न सुनिएउ काना, पाप लगे वो हर समाना।' सब कुछ गुरु है। स्त्री का पति गुरु नहीं हो सकता। गुरु होगा तो विषय छोड़ने पड़ेंगे। माताओ! बहनो! अपने घरों में शान्ति रखा करो, प्यार किया करो। जितना प्यार करोगी, उतना भजन बनेगा, उतना गुरु का रूप बनेगा। थोड़ा बोलो, कम खाओ। हमारे जैसे जाते हैं तो उन्हें हलवा पूरी खिलाती हो और अपने पतियों को गठा-रोटी, चटनी-रोटी देती हो तो तुम्हारा भला नहीं हागा। अपने पतियों की सेवा किया करो। 'साधु भूखा भाव का भोजन भूखा नाय। जो भूखा भोजन का वो तो साधू नाय'॥ साधू आया पाँवणा माँगे चार रतन। धुनो पानी साथरा सरदा सारो अंग॥' अपने सास-ससुर की, अपने पतियों की सेवा किया करो और पतियों को भी चाहिए कि वे अपनी पत्नियों की सेवा करें। ३-४ बातें याद रखो। ब्रह्मचर्य का पालन करो, प्यार से रहो, नाम की कमाई करो, गुरु का अन्तर में रूप बनाओ। नाम लेकर २-३ दिन अभ्यास नहीं किया तो समझो महीनों का परिश्रम खटाई में पड़ गया। 'नाम लिया जने सब किया सकब वेद का भेद, बिन नाम नरकी गयो पढ़ते चारों वेद। नाम लिया जने सब किया योग यग आचार, जप तप कीरत परसुराम सभी नाम की लार।' नाम उस नामी से मिला देगा।

परम दयाल जी आए थे इस वक़्त में वक़्त के अवतार

बनकर। वक़्त के बादशाह बनकर। मैं संगत से यही विनती करता हूँ कि जो मैंने कहा उसे मानवता धर्म वाले छापें, बाँटें। महाराज ने यह नहीं कहा कि मेरा नाम ले लो, वो कहते थे मेरी शिक्षा ले लो। मेरा वचन अपने दिमाग़ में रखो। मेरा प्रसाद यह है। उन्होंने यह नहीं कहा कि दसवाँ हिस्सा धन दे दो। १०,००० की भैंस बिकती है तो १,००० मन्दिर को दो यह नहीं कहा। दसवाँ हिस्सा भजन किया करो। २४ घण्टे में २-३० घण्टे। परम दयाल जी की जो बातें लेकर चलेगा, उसका बेड़ा पार है। परम दयाल जी परमसन्त थे। मेरे सतगुरु ने बताया कि परम दयाल जी के पास जाना वो तेरी मदद करते रहेंगे। परम दयाल जी ने कहा बेटा! मैं तेरे अंग-संग रहूंगा। सच्चाई से काम करना। अगर सच्चाई नहीं होगी तो मेरे पास कौन आएगा? यह बात अच्छी न लगे तो अगले साल न बुलाना, मेरा मुँह न देखना कोई। मैं सच्ची बात कहता हूँ। प्रेमियो, सत्संगियो! मेरे पर दाता की बड़ी दया थी। जो मेरे आगे घड़ी रख दी, मैंने फालतू समय ले लिया उसके लिए माफ़ी मांगता हूँ। कुछ साल बाद तुम बाद में यह कहोगे कि दिनोद वाला सन्त ताराचन्द सही कहता था कि मानव दयाल जी परम दयाल जी के साक्षात् रूप हैं। मानव दयाल जी स्वामी जी के साक्षात् रूप हैं। मैं जो देखता हूँ बताता हुँ। मैं अपनी आँखों देखी बात बताता हूँ। मैं अमरीका की बात बताता हूँ। इनका जो सेवा करेगा, उसका काम ज़रूर पूरा होगा, न पूरा हो तो मुझे पकड़ लेना डाकू की तरह। और क्या कहूँ, खुली कह दिया मैंने। काम पूरा बनेगा दोनों वक़्त अभ्यास करो। पूर्ण पुरुष का रूप देखो। ब्रह्मचर्य का पालन करो, २-४ बच्चे हो जाते हैं उसके बाद। परम दयाल जी ने कहा था कि प्यार से रहा करो। मैंने जो ज़्यादा समय ले लिया उसके लिए माफी दे देना। ये जो बैठे हैं हमारे बुजुर्ग पीरे मुर्शिद जी ये सब माफी देने वाले हैं। सबसे माफी मांगता हूँ।

सबको राधास्वामी !!!

सत्संग परमसन्त
हजूर मानव दयाल जी महाराज
28 - 9 - 1982
(सद्गुरु)

सतसंग वचन सुनाइये, मेरे सतगुरु प्यारे ।
बिन सतसंग विवेक न आये, सच्चा पन्थ लखाइये ।।
देखा देखी भेड़ चाल है, सार तत्त्व समझाइये ।
तोरथ आपके चरण में रहता, मोहि असनान कराइये ।।
गुरु के रूप में साहब बसता, अपना दरस दिखाइये ।
मैं भुजंग तुम चन्दन के तुल, अपने अंग लगाइये ।।
कोटि ग्रन्थ पढ़ पढ़ क्यों मरना, निज उपदेश चेताइये ।
मैं कुमुदिन तुम चन्द्र समाना, अमृतधार चुवाइये ।।
तुम नौका मैं लोह कठिन हूँ, भवनिधि सहज तराइये ।
राधास्वामी अपनी दया से, भरम विकार नसाइये ।।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ।।
मस्तरामसुतं देवं फकीरचन्दं पण्डितम् ।
परमसन्तं दयालुं च फकीरं वन्दे जगद्गुरुम् ।।
मानवधर्मस्य धातारं दाता दयालस्य प्रियतमम् ।
सन्तधर्मस्य गोप्तारं वन्दे फकीरं जगद्गुरुम् ।।

राधास्वामी !

मेरी अपनी ही आत्मा के स्वरूप सत्संगियो ! आज के महाराज जी के टेप रिकार्ड के सत्संग के कुछ अंश से और दाता दयाल जी का जो शब्द पढ़ा गया है उसके आधार पर मैं कुछ अपने अनुभव के साथ जो आज मेरे मन में विचार आ रहे हैं उन्हें आपसे बाँटना चाह रहा हूँ। जब-२ महाराज जी का कोई सत्संग सुना जाता है तो साधारण व्यक्ति को ऐसे लगेगा कि पिछले सत्संग में भी वही शब्द कहे और इस सत्संग में भी वही शब्द कहे यह क्या बात है। लेकिन यदि आप ग़ौर से सुनें तो वह हरएक सत्संग में एक नई चीज़ देते हैं। अब यह जो सत्संग का थोड़ा भी टुकड़ा हमने सुना उसमें माया क्या है ? कबीर साहिब का शब्द पहले भण्डारी माता ने पढ़ा है और उसमें माया का ज़िक्र है। उस माया के ज़िक्र में महाराज जी ने भी सत्संग में कहा कि मेरी माया कैसे दूर हुई ! सत्संग में तीन चीज़ें ज़रूरी हैं—(१) सत्संग, (२) सतनाम (३) नाम और सद्गुरु। गुरु पहले आता है और गुरु का मतलब दो हाथ, दो पाँव, दो आँखों और ज़बान से बोलने वाला गुरु नहीं है, वो भी है क्योंकि जीवित गुरु की बहुत महिमा है। जीवित गुरु की महिमा का क्या मतलब ? क्योंकि महाराज जी ने जब आपको यह कह दिया कि मैं आपको विधवा नहीं छोड़े जा रहा मेरा यह विश्वास है मैं उसकी पुष्टि भी कर सकता हूँ। आप जो लोग यहाँ पर हैं सब जो महाराज जी के जरा भी निकट में आये हैं, चाहे एक सत्संग सुना है चाहे दस सत्संग सुने हैं अगर आपने एक सत्संग में भी उस तत्त्व को पकड़ लिया है और महाराज जी की मूर्ति पर ध्यान लगाते हैं आप चाहे चार-२ घण्टे कानों में उंगलियाँ डाल के बैठो या न बैठो। अगर उन्होंने जो चीज़ आपको बताई और जो जीवन में उतारनी

सत्यता धर्म पर अनेक साहित्यिक ग्रन्थ लिखे जा रहे हैं। इस साहित्य का लाभ उठाते हुए सभी धर्मों के अनुयायी धार्मिक भेदभाव को मिटाकर एक दूसरे से सहयोग कर सकते हैं। भारत की वर्तमान स्थिति में भी सभी बुद्धिवादी और जागरूक राजनीतिज्ञ आज यही बात मान रहे हैं कि मानवता धर्म ही मनुष्य की एकता की रक्षा कर सकता है।

सभी धर्मों का एक लक्ष्य है और वह यह है कि मनुष्य अपने अन्दर में आध्यात्मिक पूर्णता का विकास करके ईश्वर की अनुभूति करे। सभी धर्म मतभेद रखते हुए भी इस बात को मानते हैं कि मनुष्य अपने आप में पूर्ण है। वह अपनी पूर्णता को भूल गया है। उसे इस अज्ञान मे आज़ाद करने के लिए ही हर युग में परमतत्वाधार अवतार लेकर योगसाधना का प्रचार करता है। इसी सिलसिले में ही हमारे युग में सन्तों के अवतार हुए हैं, जिन्होंने सरल से सरल सुरत-शब्दयोग की शिक्षा दी है।

जैसे कि पहले बताया जा चुका है कि सुरत - शब्दयोग मनुष्य को बहिर्मुखी अवस्था से अन्तर्मुखी अवस्था में जाने के लिए तीन बन्ध लगाता है ज़बान बन्द, आँख बन्द और कान बन्द। ज़बान को अन्तर्मुखी बनाने के लिए ही स्मरण की क्रिया बताई जाती है। प्रश्न यह उठता है कि स्मरण किसका किया जाये। अपने पूर्ण और अविनाशी भाव का अनुभव करने के लिए उसी नाम का स्मरण करना चाहिए जिसका सम्बन्ध परमतत्त्व अविनाशी और अनन्त सर्वाधार से हो। यूं तो परमतत्त्व के अनेक नाम हैं, इनमें से किसी भी नाम का स्मरण किया जा सकता है किन्तु अन्तर्मुखी होने के लिए केवल उसी नाम का स्मरण करना चाहिए जो सतगुरु से दीक्षा के समय मिलता है।

नाम दान के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा जा चुका है।

गुरु केवल उस अधिकारी को ही नाम दान देता है, जिसके अन्दर इस दुःखद संसार से निकल कर दयाल को प्राप्त करने की ज़बरदस्त इच्छा होती है। इसलिए स्मरण के लिए गुरु से दीक्षा लेने स पहले सत्संगी में ऐसी भावनाएँ और ऐसे लक्षण होने चाहिएँ जो उसे अधिकारी बनाते हैं। आजकल के गुरुमत में इस तरफ ध्यान नहीं दिया जा रहा है। स्मरण के लिए नाम लेना एक फैशन हो गया है। सैकड़ों हज़ारों व्यक्तियों को एक साथ नाम दे दिया जाता है। उपनिषद् काल में कई वर्षों के परीक्षण के बाद ही अधिकारी को नाम दिया जाता था। सतगुरु थोड़े अर्से में भी पहचान लेते हैं कि नाम लेने वाला अधिकारी है या नहीं। फिर भी कुछ ऐसे लक्षण हैं जो अधिकारी सत्संगी में ज़रूर होने चाहिए। अगले मासिक सन्देश में इन लक्षणों की व्याख्या की जाएगी।

स्थान के अभाव से मुझे मजबूरन स्मरण के बारे में और कुछ न लिखने की प्रेरणा मिल रही है। इसलिए आपको इस व्याख्या के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। लेकिन यह इन्तज़ार आगे चलकर आपके लिए लाभदायक साबित होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। इन शब्दों के साथ मैं आप सबको सद्भावना, सद्विचार और शुभ आशीर्वाद देता हूँ।

सभी को राधास्वामी ! आपका फकीरमय,
मानव

※ शुभ सूचना ※

सब भाई बहनों को सूचित किया जाता है कि 13,14 अप्रेल 1985 को मानवता मन्दिर सतैहरी रोड़ होशियारपुर में वैशाखी का उत्सव पहले की तरह बड़े उत्साह के साथ मनाया जायेगा। बाहर से आने वाले सज्जनों का भोजन और रहने का प्रबन्ध यथाशक्ति ट्रस्ट करेगा। अपना बिस्तर साथ लाये।

— प्रोग्राम —

शनिवार 13 अप्रैल	प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक
	सायं 4 बजे से 6 बजे तक
रविवार 14 अप्रैल	प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक
	सायं 4 बजे से 6 बजे तक

Regd. No. 26265/74 MARCH 11th 1985

MANAV MANDIR NWHSP—7

ADDRESS 12

To

Hazur Anand Rao Ji Mahara
1-3-17, Khalasi Guda,
Secunderabad A.P.

Phone : 2022

From

MANAVTA MANDIR
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR-146001.

Printed by Dev Rao Press Manavta Mandir, Hoshiarpur (Pb.)